Lecture Series — 76
Date — 14/[illegible]

→ Rejection of Holidays — वेबर ने बतलाया कि धर्म के प्रति प्रोटेस्टेन्ट धर्म के आधार अधिक अवकाश के पक्ष में नहीं है। इसके फलस्वरूप इस धर्म के अनुयायी ईश्वर को सम्मान देने के लिए अधिक से अधिक श्रम करना पसंद करते हैं। वे कर्मकाण्डों और उत्सवों के कारण अधिक अवकाश लेने में विश्वास नहीं रखते हैं। इसके साथ ही इस धर्म में उन कर्मकाण्डों तथा उत्सवों की संख्या भी अधिक नहीं है जिनके कारण इसके अनुयायियों को अपने कार्य से अवकाश लेना पड़े। वेबर ने इस संबंध में कैथोलिक, इस्लाम, बौद्ध तथा हिन्दू धर्म की चर्चा करते हुए बतलाया कि इन धर्मों में कर्मकाण्डों की संख्या अधिक होने के कारण सामाजिक रूप से भी लोगों को अधिक अवकाश लेने की स्वीकृति दी जाती है। दूसरी ओर प्रोटेस्टेन्ट धर्म के मानने वाले लोग कम अवकाश लेने के कारण अधिक धन उपार्जित करने में सफल हो जाते हैं। यह दशा भी पूंजीवाद के विकास में सहयोग करती है।

8) Protestant Asceticism — वेबर के विभिन्न धर्मों के वैराग्य का संबंध जहाँ सांसारिक दायित्वों से विमुख हो जाना अथवा एक सक्रिय जीवन को छोड़ देना है वहीं प्रोटेस्टेन्ट धर्म एक ऐसे वैराग्य को प्रधानता देता है जिसमें व्यक्ति धन तो उपार्जित करता है लेकिन उसके संचय से वैराग्य लेता है। इसका तात्पर्य है कि प्रोटेस्टेन्ट वैराग्य धन को संचित करने के स्थान पर उसको अधिक

से अधिक उपभोग करने पर बल दिया है। यह धर्म जीवन को त्याग और गलतियों से युक्त मानता है। इसलिए प्रोटेस्टेन्ट आचार यह है कि जब तक जीवन है तब तक अधिक से अधिक श्रम करके धन उपार्जित करना चाहिए और अधिक से अधिक आनंद प्राप्त करने के लिए धन का उपभोग करना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि प्रोटेस्टेन्ट धर्म ने व्यक्तियों को प्रतिस्पर्धा से संबंधित वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने में विशेष योगदान दिया। वेबर का कहना है कि प्रोटेस्टेन्ट धर्म का यह आचार बहुत बड़ी सीमा तक पूंजीवाद के सार के समकक्ष है।

Consideration of Cause & Effect

पूंजीवाद की विशेषताओं तथा प्रोटेस्टेन्ट धर्म के आचारों के बीच पायी जाने वाली उपर्युक्त समानताओं को स्पष्ट करने के बाद वेबर ने इनके ~~प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब~~ कारण और परिणामों पर विचार किया।

उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि धार्मिक आचारों के प्रभाव से ही कुछ समाजों में आर्थिक जीवन तर्कपूर्ण बना जबकि कुछ समाजों में आर्थिक जीवन में तार्किकता का स्थान बहुत गौण रह गया। इस संबंध में यह भी कहा जा सकता है कि स्वयं पूंजीवाद की विशेषताएं भी प्रोटेस्टेन्ट आचारों के विकास का कारण हो सकती हैं।

लेकिन हेनू! निष्कर्ष इसलिए सही नहीं है कि इन जिन समाजों में प्रोटेस्टेंट धर्माचार अथवा इससे मिलते-जुलते धर्माचार विकसित नहीं हुए, वहाँ पूंजीवादी प्रणाली के आधार पर आर्थिक विकास प्रारंभ हो जाने के बाद भी वह कुछ समय बाद रुक गया। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि धर्म के आचार कारण हैं जबकि पूंजीवाद का विकास उसका परिणाम है। वेबर ने यह स्पष्ट किया कि पूंजीवाद के विकास पर प्रोटेस्टेंट धर्म के आचारों का प्रभाव किस सीमा तक पड़ा है, इसे निश्चित नहीं किया जा सकता है लेकिन एक कारण के रूप में इसे तब तक मान्यता दी जा सकती है जब तक पूंजीवाद के विकास को कोई दूसरा सुदृढ़ आधार न खोज लिया जावे।